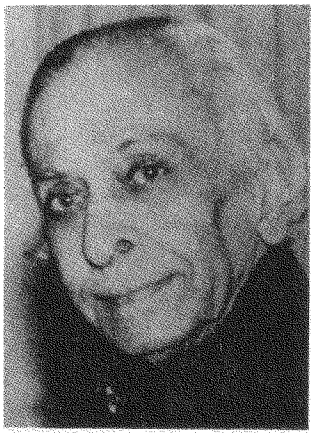

राजा राव

Raja Rao

श्री राजा राव, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपने सर्वोच्च सम्मान, *महत्तर सदस्यता*, से विभूषित कर रही है, भारत में अंग्रेज़ी कथा-साहित्य के महत्त्वपूर्ण लेखक हैं और आपने अंग्रेज़ी में लिखित भारतीय उपन्यास को दुर्लभ आध्यात्मिक ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं।

1988 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ ओक्लाहोम से अत्यंत स्पृहणीय न्यूस्टाट प्राइज़ स्वीकार करते हुए श्री राजा राव ने कहा था, "मैं ख़ामोशी-पसंद व्यक्ति हूँ। और उस ख़ामोशी से शब्द उद्‌भूत होते हैं, प्रकाश के साथ, प्रकाश से और प्रकाश पवित्र है ...। लेखक या कवि वह होता है, जो सामान्य शब्द को उसकी ख़ामोशी के उद्‌गम से वापस लाना चाहता है, जिससे कि सर्जित शब्द प्रकाशमान हो सके।" यही वह चैतन्य है, जिसने राजा राव की रचनाओं को प्रार्थना की ऊँचाई दी है।

राजा राव का जन्म 5 नवम्बर 1908 को मैसूर के हस्सना नामक स्थान में हुआ। जब आप मात्र चार वर्ष के थे, आपकी माँ का निधन हो गया। 1915 में आपने छात्र के रूप में मदरसा-ए-आलिया, हैदराबाद में दाख़िला लिया और 1925 में वहीं से स्नातक उपाधि प्राप्त की। आपने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी का अध्ययन किया और निज़ाम कॉलेज, हैदराबाद से बी.ए. की उपाधि ली। सर पैट्रिक गेड्डेस के आमंत्रण पर आप 1929 में कॉलेज इकोस्सेए मांतपेलिए, फ्रांस गये। हैदराबाद सरकार से विदेश में अध्ययन हेतु मिली एशियाई छात्रवृत्ति ने आपको फ्रांस में रुकने और सोरबोन में अध्ययन (1930-33) के लिए प्रेरित किया। इसी बीच आप *जय कर्नाटक* पत्रिका में कन्नड में लिखने लगे। आपने सोरबोन में लुई केजामिआँ के निर्देशन में 'आइरिश साहित्य पर भारतीय प्रभाव' विषय पर शोध-कार्य किया। 1932 से राजा राव ने *मर कुरे दे फ्रांस* (पेरिस) के सम्पादन मंडल में पद-भार ग्रहण किया। 1933 में आप तुंगभद्र में पंडित तारानाथ के आश्रम में रहने के लिए भारत लौटे। लगभग इसी समय प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपकी कहानियों के फ्रांसीसी और अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित होने लगे थे। आपने अंग्रेज़ी में भी लिखना शुरू किया। आपका पहला उपन्यास *कांतापुर* 1938 में लंदन से प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् कहानी-संग्रह *द काउ ऑफ़ द बैरीकेड्स एंड अदर स्टोरीज़* प्रकाशित हुआ। इन प्रारम्भिक कृतियों के बारे में आपका कथन है : "*कांतापुर* और *द काउ ऑफ़ द बैरीकेड्स* में मनुष्य के मानवतावादी और स्वच्छंदतावादी परिप्रेक्ष्य से आरम्भ कर—दोनों महात्मा गाँधी के अहिंसावादी दर्शन से गहरे प्रभावित हैं—मैं शीघ्र ही आध्यात्मिक उपन्यास तक आया। *द सर्पेंट एंड द रोप* और *द कैट एंड शेक्सपीयर* भ्रम और

SRI Raja Rao on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is one of the most distinguished writers of English fiction in India, whose contributions have taken Indian novel in English to rare spiritual heights.

Accepting the much-coveted Neustadt Prize from the University of Oklahoma in 1988, Sri Raja Rao said, "I am a man of silence. And words emerge from that silence with light, of light, and light is sacred ... The writer or the poet is he who seeks back the common word to its origin of silence, in order that the manifested word become light." It is this awareness that has given Raja Rao's works the quality of prayers.

Born in Hassana, Mysore on 5 November 1908, Raja Rao lost his mother when he was four. From 1915 onwards he was a student of Madrasa-e-Aliya in Hyderabad from which he graduated in 1925. He studied English at Aligarh Muslim University and had his B.A. degree from Nizam's College, Hyderabad. He joined the College des Ecossais, Montpellier, France in 1929 on an invitation from Sir Patrick Geddes. The Asiatic Scholarship for study abroad from the government of Hyderabad encouraged him to stay in France and also study at the Sorbonne (1930-33). Meanwhile he also began writing in Kannada for the periodical *Jaya Karnataka*. His research in Sorbonne was on the Indian influence on Irish literature, done under Louis Cazamian's supervision. From 1932 Raja Rao joined the editorial board of the *Mercure de France* (Paris). In 1933 he returned to India to live in Pandit Taranath's ashram in Tungabhadra. Around the same time the French and English versions of his stories began to appear in reputed journals abroad; he also began writing in English. His first novel, *Kanthapura* was published from London in 1938, followed by *The Cow of the Barricades and Other Stories*. Raja Rao's comments on these early works are revealing : "Starting from the humanitarian and romantic perspective of man in *Kanthapura* and *The Cow of the Barricades*—both deeply influenced by Mahatma Gandhi's philosophy of non-violence I soon came to the metaphysical novels, *The Serpent and the Rope* and *The Cat and*

यथार्थ की वैदांतिक धारणा पर आधारित हैं। मेरी मुख्य रुचि मानव-परिस्थिति की जटिलता (जो कि—मनुष्य का यथार्थ उसके व्यक्तित्व से परे है—है) और किसी भी मानव अभिव्यक्ति की प्रतीकात्मक निर्मिति प्रदर्शित करना है। सभी शब्द अज्ञात पर या अज्ञात के सौपानिक प्रतीक हैं, सूक्ष्मता में लगभग गणितीय।"

इस बीच राजा राव सत्य की तलाश में एक आश्रम से दूसरे आश्रम में भटकते रहे। श्री अरविन्द, रमण महर्षि, महात्मा गाँधी और आत्मानंद—उनके गुरुओं में से थे, जिनसे वे 1934 और 1944 के मध्य मिले और साथ रहे। कुछ समय के लिए वे ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक भूमिगत आंदोलन में भी सक्रिय रहे। 1948 में राजा राव ने आंद्रे मालरो के साथ भारत-भ्रमण किया और दो वर्षों बाद उनका उपन्यास *द सर्पेंट एंड द रोप* प्रकाशित हुआ। प्रकाशित होते ही पूरे विश्व का ध्यान इस ओर गया और 1964 में इस कृति के लिए आपको साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। *द कैट एंड शेक्सपीयर : ए टेल ऑफ़ इंडिया* 1965 में प्रकाशित हुआ। इसके अगले वर्ष से आपने टेक्सास यूनिवर्सिटी, ऑस्टिन के प्रत्येक सत्र में भारतीय दर्शन पढ़ाना शुरू किया। 1969 में आपको पद्मभूषण से अलंकृत किया गया और 1972 में वुडरो विल्सन इंटरनेशनल सेंटर, वाशिंगटन डी.सी. का फ़ेलो बनाया गया। 1976 में *कामरेड किरिलोव* का प्रकाशन हुआ। इसके पश्चात् 1978 में *द पोलिसमैन एंड द रोज़ : स्टोरीज़* प्रकाशित हुआ। 1980 में राजा राव टेक्सास विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र के प्रोफ़ेसर इमेरिटस के पद से सेवानिवृत्त हुए। आप 1984 में मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन, अमेरिका के मानद फ़ेलो चुने गये। 1988 में *चेसमास्टर एंड हिज मूव्स* का प्रकाशन हुआ, जिसे साहित्य का न्यूस्टाट अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्री राजा राव द्वारा सम्पादित ग्रंथों में *चेंजिंग इंडिया : ऐन एंथोलॉजी* (1939), *ह्विदर इंडिया* (1948) और जवाहरलाल नेहरू की *सोवियत रशिया : सम रैंडम स्केचेज़ एंड इम्प्रेशंस* (1948) शामिल हैं। विश्वभर की महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं में आपकी कहानियाँ, यात्रा-वृत्त, समालोचनात्मक लेख और साक्षात्कार प्रकाशित हुए हैं।

ई.एम. फॉर्स्टर का मानना है कि *कांतापुर* किसी भारतीय द्वारा अंग्रेज़ी में लिखित सर्वोत्कृष्ट उपन्यास है। इसकी एक विशेषता है, उन असंख्य गाँवों में से एक का जीवंत चित्रण, जो भारत की प्राचीन, बल्कि सजीव संस्कृति की निधि हैं। अपने विशद विवरण में श्री राव नितप्रति की गतिविधियों, धार्मिक कर्मकाण्ड और समुदाय की सामाजिक संरचना का वर्णन करते हैं और दर्जनों अविस्मरणीय ग्रामीण पात्रों की सर्जना करते हैं। बाह्य स्तर पर यह एक राजनीतिक उपन्यास है, जिसमें एक शोषण करने वाले क्षेत्र-प्रबंधक और उसका समर्थन करने वाली पुलिस के विरुद्ध विद्रोह का वर्णन किया गया है, लेकिन गहरे स्तर पर, यह कांग्रेस पार्टी की गतिविधियों की अपेक्षा, लम्बे समय से सुप्त भारतीय आत्मा के जागरण में विद्रोह के मूल की तलाश करता है। गाँव का एक युवा, जब वह बाहर था, सत्याग्रह की एक अलौकिक रूपांतरण की प्रक्रिया से गुज़रता है और लौट कर गाँव वालों को सिविल नाफ़रमानी के लिए उकसाता है। वह, उनमें न केवल सामाजिक अधर्म की समझ विकसित करता है, बल्कि एक धार्मिक उन्माद पैदा करता है, जो कि उत्पीड़नकर्ताओं के विरुद्ध शक्ति का सच्चा स्रोत सिद्ध होता है।

यदि *कांतापुर* एक ऐसा उपन्यास है, जिसमें घटनाओं और पात्रों के कारण ही मुख्यतः पाठकों की रुचि बनी रहती है, तो *द सर्पेंट एंड द रोप*

Shakespeare based on the Vedantic conception of illusion and reality. My main interest increasingly is in showing the complexity of the human condition (that is, the reality of man is beyond his person) and in showing the symbolic construct of any human expression. All words are hierarchic symbols, almost mathematical in precision, on and of the unknown."

Meanwhile Raja Rao went from ashram to ashram in his quest for truth. Sri Aurobindo, Ramana Maharshi, Mahatma Gandhi and Atmananda were some of the Gurus he met and lived with between 1934 and 1944. For a brief while he was also active in an underground movement against the British. In 1948, he returned to France, and after two years visited the United States. Sri Raja Rao travelled in India with Andre Malraux in 1958 and after two years published the novel *Serpent and the Rope* that immediately captured the world's attention and won him the Sahitya Akademi award in 1964. *The Cat and Shakespeare : A Tale of India* came out in 1965. The following year Raja Rao began teaching Indian philosophy each Fall semester at the University of Texas, Austin. He was awarded Padma Bhushan in 1969 and named a Fellow of the Woodrow Wilson International Centre, Washington D.C. in 1972. *Comrade Kirillov* came out in 1976, followed by *The Policeman and the Rose : Stories* (1978). Raja Rao retired as Professor Emeritus of Philosophy from the University of Texas in 1980, and was elected Honorary Fellow of the Modern Language Association of America in 1984. 1988 saw the publication of his *Chessmaster and His Moves* followed by the Neustadt International Prize for Literature. Sri Raja Rao's works as editor include *Changing India : An Anthology* (1939), *Whither India* (1948) and Jawaharlal Nehru's *Soviet Russia : Some Random Sketches and Impressions* (1948). He has also widely contributed stories, travelogues, critical articles and interviews to important journals all over the world.

E.M. Forster considered *Kanthapura* to be the best novel ever written in English by an Indian. Not the least of its merits is the picture it gives of life in one of the innumerable villages that are the repositories of India's ancient but living culture. In vivid detail, Rao describes the daily activities, the religious observances, and the social structure of the community, and he brings to life in his pages a dozen or more unforgettable individual villagers. The novel is political on a superficial level in that it chronicles a revolt against an exploitative plantation manager and the police who support him. But more profoundly, it traces the origins of the revolt more to an awakening of the long-dormant Indian soul than to the activities of the Congress party. One of the young men of the village, while away, undergoes a mystical conversion to Satyagraha, and returns to incite his fellow villagers to civil disobedience. He arouses in them not only a sense of social wrong but, more importantly, a religious fervour which proves to be the true source of their strength against the oppressors.

और द *कैट एंड शेक्सपीयर* आध्यात्मिक उपन्यास हैं, जिनमें कथानक, परिवेश और यहाँ तक कि पात्र भी अनुषंगी रुचि के हैं। द *सर्पेंट एंड द रोप* में एक विद्वान भारतीय ब्राह्मण और एक फ्रांसीसी महिला प्रोफ़ेसर के विवाह-विच्छेद का, मुख्यतः दार्शनिक आधार पर वर्णन है। यह सम्मिलन ब्राह्मण की वैदांतिक धारणा की असंगति कि 'यथार्थ मेरा स्वयं है' और पत्नी के पश्चिमी विश्वास—यद्यपि कि वह बौद्ध मतावलम्बी हो गयी है—कि हमारी इंद्रियों का साक्ष्य हमसे बाहर के वस्तुपरक यथार्थ में है—पर आधारित है। "संसार या तो अयथार्थ है या यथार्थ—साँप अथवा रस्सी।" ब्राह्मण अपनी पत्नी को आश्वस्त करता है, "दोनों के बीच में कुछ नहीं है ...।" राजा राव विश्व इतिहास से गुज़रते हुए और यूरोप तथा एशिया के धर्म, दर्शन और साहित्य के मध्य विचरण करते हुए अपने पाठकों को जो अनुभूति प्राप्त करने का अवसर देते हैं, थॉमस मान के द *मैजिक माउंटेन* को छोड़कर अन्य किसी आधुनिक उपन्यास से उसकी तुलना नहीं की जा सकती। आप संस्कृत, लैटिन, प्रोवेंकल, इतालवी, पुरानी फ्रांसीसी और दूसरी भाषाओं के असमंजसकारी चयन के लम्बे-लम्बे उद्धरण देते हैं।

द *कैट एंड शेक्सपीयर* छोटी और अपने स्वर में हल्की-फुल्की कृति है, यद्यपि आध्यात्मिक उतनी ही है। इसकी जाँच-पड़ताल का विषय है—व्यक्ति का प्रारब्ध और इसका हल एक सरकारी क्लर्क द्वारा बताये गये एक अनूठे सादृश्य में है: "बिल्ली के बच्चे का मार्ग पकड़ें। तभी आप सुरक्षित हैं। माँ-बिल्ली को अपने को ढोने की अनुमति दें, श्रीमन्।" राजा राव यहाँ इस वैदांतिक मत का उपयोग करते हैं कि विश्व परम ब्रह्म की लीला है और इसका परिणाम है अद्भुत कॉमेडी, जो कि शेक्सपीयर और उसकी भाषा को भी नहीं बख़्शती।

कामरेड किरिलोव में राजा राव भारतीय परम्परा में साम्यवाद को वैचारिक रूप से परकीय के रूप में उद्घाटित करते हैं। गाँधीवाद के प्रति अपनी अभिरुचि को आप छिपाते नहीं और उसे विश्व की भावी राजनीतिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार करते हैं। द *चेसमास्टर एंड हिज मूव्स* की जड़ें भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में गहराई में हैं। यह एक महाकाव्यात्मक उपन्यास के रूप में उभरकर सामने आता है और यह तीन देशों—भारत, इंग्लैंड और फ्रांस को समेटे हुए है। इसके अतिरिक्त चौथा है—मानव मस्तिष्क। सूत्रों में प्रायः अभिव्यक्त भारत के गुह्य ज्ञान पर भाष्य के रूप में इसकी संरचना की गयी है। इस तरह के भाष्यों की विशेषता है—उनकी सूत्रात्मक शैली, जो अपनी आख्यान प्रविधि में पूर्णतः भारतीय है और बाण की *कादम्बरी* या विक्रमादित्य की कथाओं की तरह बहुत-सी कहानियाँ अपने में आत्मसात् किये रहती है। द *चेस मास्टर एंड हिज मूव्स* अद्वैत वेदांत की आध्यात्मिक स्थिति से उपनिषदों के महान सत्य 'तत्वमसि' को उद्घाटित करता है। यहाँ पर पात्र मोक्ष की शब्दावली में आध्यात्मिक चेतना की एक माप रखते हैं।

राजा राव का समूचा रचना-संसार उद्देश्य की गम्भीरता, विचारों की समृद्धि, विविध सूक्ष्म विवरण की प्रस्तुति के विवेक और एक विशिष्ट तथा जीवंत अंग्रेज़ी गद्य के लिए उल्लेखनीय है। वह कहते हैं—"हम अंग्रेज़ों की तरह नहीं लिख सकते। हमें लिखना भी नहीं चाहिए। इस व्यापक संसार को अपने अनुषंग के रूप में देखने के लिए हम बड़े हुए हैं। इसलिए हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम एक बोली होनी चाहिए, जो किसी दिन इतनी विशिष्ट और वैविध्यपूर्ण सिद्ध होगी, जैसी कि आइरिश या अमरीकी है।" वस्तुतः राजा राव की अपनी शैली अंग्रेज़ी में लिखित

If *Kanthapura* is a novel in which the reader's interest is held mainly by its action and characters, *The Serpent and the Rope* and *The Cat and Shakespeare* are metaphysical novels in which plot, setting and even characters are of secondary interest. Semi-autobiographical, *The Serpent and the Rope* records the disintegration of a marriage, mainly on philosophical grounds, of a very scholarly Indian Brahmin and a French woman professor. The union flounders on the incompatibility of the Brahmin's Vedantic conviction that "Reality is my Self" and the wife's Western belief—even though she has become a Buddhist—that the evidence of our senses is based on an objective reality outside ourselves. "The world is either unreal or real—the serpent or the rope," the Brahmin assures his wife. "There is no in-between-the-two ..." The intellectual demands that Raja Rao, roaming at large through world history and among the religions, philosophies, and literatures of Europe and Asia, makes upon his readers are unequalled in any modern novel since Thomas Mann's *The Magic Mountain.* He quotes at length from a bewildering assortment of languages like Sanskrit, Latin, Provencal, Italian, Old French and other tongues.

The Cat and Shakespeare is much shorter and lighter in tone, though scarcely less metaphysical. The subject of its probings is the problem of individual destiny, and the solution is conveyed in an odd analogy stated by a government clerk : "Learn the way of the kitten. Then you are saved. Allow the mother cat, sir, to carry you." Raja Rao here exploits the vedantic idea of the world's being a play-*lila*-of the Absolute and the result is a hilarious comedy that does not even spare Shakespeare and his language.

In *Comrade Kirillov,* Raja Rao exposes communism as ideologically alien to the Indian tradition. He does not hide his preference for Gandhism that he considers to be the next political system of the world. *The Chessmaster and His Moves* is firmly rooted in the Indian metaphysical tradition that it seeks to illuminate in the form of an epic novel incompassing three countries—India, England and France —besides the fourth one, of the human mind. Structured as a *bhashya* on the esoteric knowledge of India often expressed in the terse, aphoristic style characteristic of such commentaries, totally indigenous in the narrative pattern that collapses a number of stories as in Bana's *Kadambari* or the *Vikramaditya Tales. The Chessmaster and His Moves* reveals the great upanishadic truth of *tat twam asi* from the metaphysical position of Advaita Vedanta. The characters here seem to comprise a scale of spiritual awareness in terms of deliverance.

The whole *oeuvre* of Raja Rao is notable for seriousness of purpose, profundity of thought, a flair for vivid presentation of detail and a distinctive and vigorous English prose. He holds : "We cannot write like the English. We should not. We cannot write only as Indians. We have grown to look at the large world as part of us. Our method of expression therefore has to be a dialect which will some

भारतीय कथा-साहित्य के क्षेत्र में इस तरह की विशिष्ट अभिव्यक्ति की अभी तक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

अट्ठासी साल की वय में राजा राव सृजन-रत उपन्यासकारों में सबसे अधिक प्रयोगधर्मी हैं। यूरोपीय परम्परा के उपन्यासों से साहसपूर्वक अलग होते हुए—भारतीय साहित्यिक परम्परा से सामग्री को आत्मसात् करने की प्रक्रिया में आपने इसका भारतीयकरण किया है। आप अपनी कथा-कृतियों के माध्यम से स्वयं के लेखन और विश्व के आध्यात्मिक आधार की छानबीन करते हैं। आपका सरोकार मानव स्थितियों से है, न कि किसी राष्ट्र या व्यक्ति से। आपके लिए लेखन एक साधना है, आत्मिक उन्नति का एक रूप। यही कारण है कि आप कह सकते हैं कि आप तब भी लिखते रहेंगे, जब कि संसार में अकेले रह जायें। कथा-साहित्य में अध्यात्म का विनियोजन कर राजा राव ने इस विधा की शक्ति को बढ़ा दिया है।

कथाकार के रूप में अपने निर्विवाद उत्कर्ष के लिए साहित्य अकादेमी, राजा राव को अपने सर्वोच्च सम्मान, *महत्तर सदस्यता*, से विभूषित करती है। □

day prove to be as distinctive and colourful as the Irish or the American." In fact Raja Rao's own style is as yet the best example of this kind of distinctive expression in Indian fiction in English.

At eightyeight, Rao is one of the most innovative novelists now writing. Departing boldly from the European tradition of the novel he has indigenized it in the process of assimilating material from the Indian literary tradition. He explores the metaphysical basis of writing itself, and of the world through his works of fiction. His concern is with the human condition rather than with a particular nation or people. Writing to him is *sadhana,* a form of spiritual growth. That is why he can say that he would go on writing even if he were alone in the world. In appropriating for fiction the domain of metaphysics, Raja Rao has enlarged the potential of the very genre.

For his unquestionable eminence as fiction writer, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Raja Rao. □

Acceptance Speech

Raja Rao

TO the esteemed members of the Sahitya Akademi,

I am a proud Indian. It is my *karma* that has destined me to live more than half my life outside this *Puṇyabhūmi*. India indeed is the land of the ultimate value, The Truth. Hence we can believe and shout *Satyameva Jayate*.

My dream would have been to write in that luminous and precise language Sanskrit, the richest *vāk* in the world. The Sanskrit Dictionary, when it is completed, I am told would be in about one hundred volumes. But destiny has forced me to learn English first—my primary school teachers were all English or Anglo-Indian—and it was a struggle with my father to go back to a little Sanskrit. It was only in this wise and rich language I would have liked to have written. Alas it has not been so. But Kannada my mother tongue, which historians tell me, was alive in the Third Century before Christ—it is this language belonging to the Hoysala Land, I should have written in. But my *karma* made me live outside of Karnataka—I was going to say Mysore! -but my Kannada was a babble. I tried and failed writing in it. Thus English had to be. The only virtue of English is, it is an Indo-European tongue. An excellent English Dictionary published in America, sometime ago, has over ninety pages right at the end, to indicate the Indo-European roots of those given words. And often those roots are the same or similar to those of our Sanskrit.

Thus, though exiled, my country ever and ever is the sacred land, *Bhāratha Varṣa*. And the honour that the Sahitya Akademi has bestowed on me, in electing me a fellow of this august body, is to show I am not such a renegade as I might have seemed to be.

Thus my deepest gratitude goes to you, for your generous gesture.

However, to have been born in India and not have written in Sanskrit, or at least in Kannada is believe me, an acute humiliation. But I still dream of writing in Sanskrit—one day! May those of you who have given me this honour, deeply wish my dream be achieved. Let my hand and head be blessed by the Mother of *vāk*, the *vākdevī*, that I achieve this one day.

I deeply thank, once again, the Sahitya Akademi, for having given me the honour of making me a fellow of your unique organization. *Namaste*!!!